

नाम : रामलोचन ठाकुर

अन्य नाम : अग्रदूत, कुमारेश काश्यप, मुजतबा अली

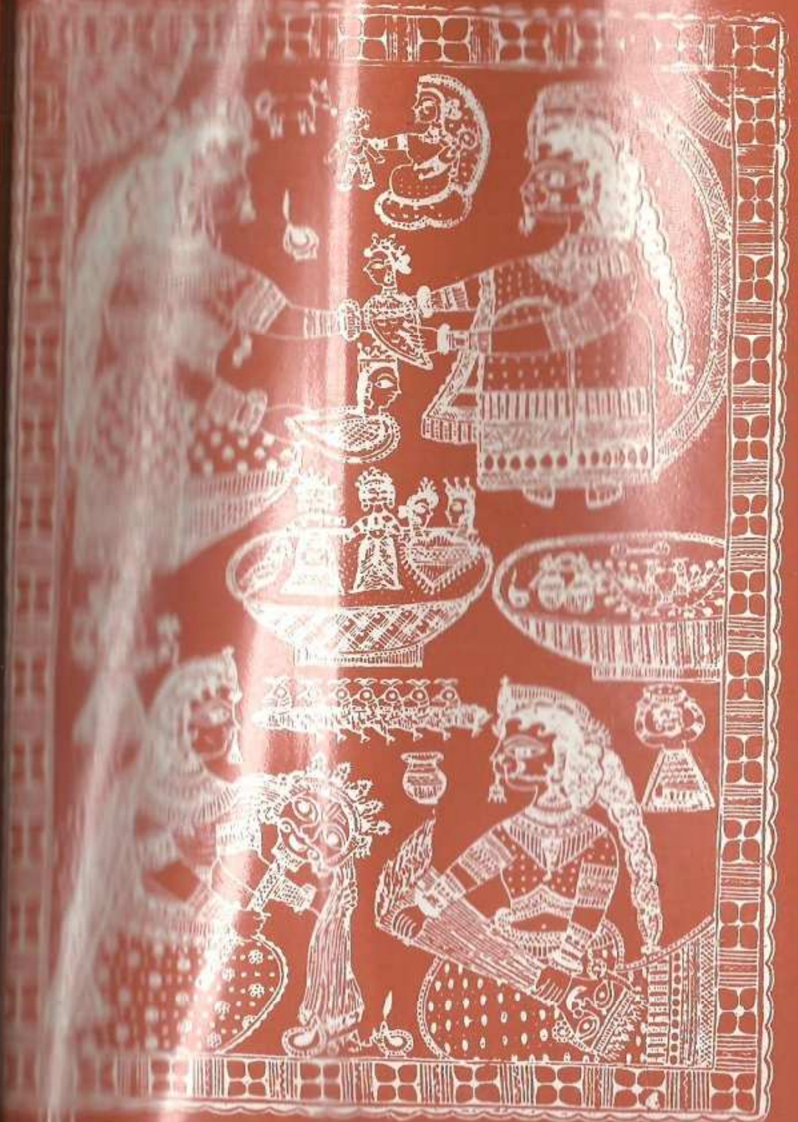
जन्म भूमि : ग्रा॰ + पत्रा॰ - बाबूपाली (पाली मोहन)
खजौली, मधुबनी, मिथिला

लेखन / प्रकाशन : इतिहासहंता (कविता, 1977)
बेताल कथा (हास्य - व्यंग्य, 1981)
जादूगर (अनु॰ नाटक, 1982)
प्रतिध्वनि (अनु॰ कविता, 1982)
मैथिली लोक कथा (1983)
माटि - पानिक गीत (1985)
देशाक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता, 1986)
अपूर्वा (कविता - गीत, 1996)
फाँस (अनु॰ नाटक, 1997)
जा सकै छी, किन्तु किए जाउ (अनु॰ कविता, 1999)
लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता, 2003)

सम्पादन : आजुक कविता (1984)
रंग मंच (नाट्य-मंच विषयक पत्रिका)
अग्निपत्र (मैथिली युवा लेखन संकलन)
सुल्फा (हस्त लिखित पत्रिका)

𑒪𑒰𑒐 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒞𑓂𑒞𑒩𑒱𑒞

𑒩𑒰𑒧𑒪𑒼𑒔𑒢 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩



''हम चाहै छी हमर कविताक भाव
कोटि कोटि शोषित निपीड़ित मनुपुत्रक
परितोष नहि, आक्रोशक उपादान हो
मुक्ति संघर्षक प्रेरणा,
शक्ति सरंजाम हो हम चाहै छी''

पूर्वज लोकनि शब्द कैं कहने छला ब्रह्म, स्रष्टा, सेतु, आलोक । शब्द आइ मुक्तिक हेतु कछमछाइत अछि । रामलोचन ठाकुर ओइ कछमछी मे आकुल - व्याकुल शब्द कैं अपन हेरायल अर्थ तकबा मे मदति करैत छथि । निराशाक बिरड़ो मे आशाक नव आलोक सन्धान कठिन । हजार - हजार चुगिला मे रामलाल गोआर सन लोकक संधान कठिन । एहने कठिन काज सभ करैत अछि शब्द आ शब्द सँ गढ़ल राम लोचन ठाकुरक कविता । हुनक कविताक अंत निहित स्पन्दन अछि ''जय हो मनुक्खक आ जय हो जीवनक – मुक्ति संघर्ष सँ प्रेरित जीवनक जय हो ।'' हजार हजार लोक जकरा स्वीकार कए लेने अछि तकरो अस्वीकार करबा मे हुनका कोनो तारतम्य वा असमंजस नहि । युधिष्ठिर, भगवान तथागत, सम्राट अशोक सन लोक कैं समुचित कारण देखबैत अस्वीकार करैत छथि । तहिना समुचित कारण देखबैत आरसी प्रसाद सिंह, शक्ति चट्टोपाध्याय, नेलसन मंडेला आदि कैं स्वीकार करैत छथि ।

सौन्दर्य बोध लेल ताजमहल, अजन्ता, एलोरा, खजुराहो, कोणार्क आदि विख्यात पर्यटन स्थल सभकैं मापदण्डक रूप मे स्वीकार नहि करैत छथि । साँझक मेघाच्छन्न आकाश मे उड़ल जाइत सारस, वैसाखक दुपहरिया ं

लाख प्रश्न अनुत्तरित

रामलोचन ठाकुर

अरूणोदय प्रकाशन
कोलकाता / बाबूपाली

लाख प्रश्न अनुत्तरित
(कविता - संग्रह)
रामलोचन ठाकुर
© सीता ठाकुर
के॰ सी॰ – 88,
साल्ट लेक, कोलकाता - 700 098

प्रथम प्रकाश :
मैथिली दिवस, 1410
11 मइ, 2003

आवरण :

मूल्य : पैंतालिस टाका

मुद्रक : *शान्ति ग्राफिक्स*
32 बी॰, वृन्दावन बैशाक स्ट्रीट
कोलकाता - 5

LAAKH PRASHNA ANUTTARIT
(Collection of Maithili Poems)
by Ram Lochan Thakur
Rs. 45/= only

समर्पण –

वैश्वीकरण विरोधी
स्वर कें

कविता – क्रम

लाख प्रश्न अनुत्तरित

बात बहुत पहिनेक थिक
तहिया हम नेने रही
आ गामेक स्कूल में पढ़ैत रही
कहने छलाह गुरुजी एक दिन
दिबालपर टाङल मानचित्र देखबैत
'इएह थिक अपना लोकनिक देश
— भारतवर्ष'

'किन्तु श्रीमान्
अपने त कहने रहिअइ
भारत गामक देश थिक
आ एहिठाम त अगबे शहरे – शहर छइ
गाम कहां छइ, अपना सभक गाम ...'
पुछने छलियनि हम मानचित्र देखैत आ
हमरा बुझबैत ओ बाजल छलाह —
'ई नक्शा छइ ने, कागत पर बनल...'
'से किएक श्रीमान् एना किएक होइत छइ
जे कोनो देश माटिपर नञि
कागतक टुकड़ीपर बनैत छइ आ लाखक-लाख गाम
मुट्ठीभरि शहरक पेट मे हेरा जाइ छइ
एना किएक होइत छइ ?'
हमर प्रश्न सुनि ओ गुम पड़ि गेल छलाह
आ हमर मुंह निहारैत क्लास स बहरा गेल छलाह

★ ★ ★ ★

बात ताहि समय के थिक

एक दिन पढ़बैत छलाह गुरुजी
'अपना देशक नाम थिक भारत,
जनैत छह, एकर ई नाम केना पड़ल ?
महाराज दुष्यंतक बालक भरतक नाम पर'
पुछने छलियनि हम — 'किएक श्रीमान् !
एकर नाम रामलाल बुढ़बा
अथवा, ठकनी बुढ़ियाक नामपर किएक ने पड़लैक ?'
बिहुंसैत बाजल छलाह श्रीमान —
'भरत राजा छलाह
चक्रवर्ती सम्राट ....'
'तखन ई देश हमरा सभक कोना भेल ?'
बीचहि मे बाजल रही हम, आ
गुरुजी तमसा गेल छलाह — 'लबर – लबर जुनि बाजी
जे पढ़बैत छियह से सुनह...'

★ ★ ★ ★

बात ताही समयक थिक
एक दिन पुछने छलाह गुरुजी —
'१५ अगस्त हमरा लोकनिक लेल किएक महत्त्वपूर्ण थिक ?'
'किएक श्रीमान ?' प्रतिप्रश्न छल हमर
'उन्नैस सए सैंतालिसक एही दिन
अपना देश मे आजादी आयल....'
'श्रीमान अपने आजादी देखने छिऐक ?'
हमर नेनपन पर हंसैत बाजल छलाह श्रीमान —
'बकलेल, आजादी कि कोनो देखबाक वस्तु थिक ?'
किन्तु जिज्ञासा हमर नहि भेल छल शान्त
स्कूल स फीरि टोलक किछु पढ़ुआ सभ सं पुछने छलिऐक
जे आजादी केहन होइ छइ

विख्याता भुवनत्रयम्

लिखबा ले बैसै छी
गंगा अवतरण-कथा
लिखने चलि जाइत छी
कोशी-प्रांगणक व्यथा
स्वाभाविक
छन्द-भंग
अभिशापित कौशिकीक
आर्तनाद कोलाहल
भैरवीक नृत्यक संग
क्रन्दन चिरकालिक थिक
संभव श्मशान मे
किन्तु नञि स्तोत्र-पाठ
घंटा ध्वनि
शंखनाद
रक्तहीन, मांसहीन
कंकालक देश
हमर मातृभूमि
मिथिला ई
विख्याता भुवनत्रयम्
बिसरल कि जाइत अछि
मानै छी मीत
सत्य सरिपहुं आरोप तोहर

बीति गेल हमर समय
लिखि नञि सकै छी आब
व्यर्थ करै छी प्रलाप
संकुचित विचार बोध गहने चलि जाइत अछि
किन्तु
हम बाध्य छी
जरबय त चाहै छी
आशक आलोक नव
निराशाक बिरड़ो
मिझओने चलि जाइत अछि
लिखबा ले बैसै छी
कथा आजादी के
व्यथा बेरबादी के
लिखायल चलि जाइत अछि ।

✪ *देसिल बयना : अप्रिल १९८२*

बहिनदाइक नाम एगो चिट्ठी

बहिन दाइ !
अहाँक चिट्ठी भेटल छल
मुदा उतारा देबा मे भेल बड़ बिलम्ब
फूसि किए कही जे छलहुं बड़ व्यस्त
सरिपहुं की लिखी वा किएक लिखी
तकरे नञि क पओने छलहुं निर्णय
तें बहिन दाइ !
उतारा देबा मे भेल बड़ विलम्ब

बहिन दाइ !
हम जनैत छी जे अहां एहूबेर
बनओने हएब सामा चकेबा
तकने हएब हमर बाट
लगलापर आगि बिरदाबन मे
आ नञि पाबि हमरा
भेल हएब उदास
बहल हएत आंखि सं दहो - बहो नोर
किन्तु बहिन दाइ !
अहां मानी वा नञि मानी
थिक धरि ई सत्य जे
कुनू दावानल कें नञि मिझाओल जा सकैछ
सोबर्ना लोटा सं, आ

जेना अहाँ लिखने छी—
ठीके हम बड़ बदलि गेलौहें
हम बुझैत छी/जे बिरदाबन आब ओ बिरदाबन नञि रहि गेल-ए
आइ एकटा नञि
हजारक हजार चुगिला जनमि गेल-ए आ
इएह बिरदाबन थिक ओकरा सभक स्थायी आवास
एकर पुरान गाछ सभक घोघरि मे
एक सं एक अजोध विषधर करैए निवास
आइ
एहिठामक बसातो अइ विषयुक्त
सांसो लेबाक अनुपयुक्त
तें
हमरा विचारें
एकरा जरिए गेनाइ थिक नीक
मिझेबाक प्रयास सर्वथा अनुचित
शक्तिक अपव्यय
जे करबाक थिक संचय
आगामी कालिक निमित्त
जखन कि हमरा लोकनि लगाएब
निश्चिते लगाएब / एगो नव बिरदाबन
पटाएब / कुनू डबरीक पानि सं नञि
अपन घाम सं / आ फुलाएब
रंग-बिरंगक फूल/अपन आशाक अनुकूल
अपन कल्पना कें देब वास्तव रूप

बहिन दाइ !
हम मानैत छी / आ अहूं मानब
जे आइ / अपने गाम मे
हम सभ छी अनठिया-अनचिन्हार
जकर नञि छइ कुनू पता-ठेकाना —
सरिपहुं कतेक असह्य थिक ई पीड़ा
मुदा / ताइ लेल
कथमपि उचित नञि कानब / बरन्
चीन्हब अपन शक्ति आ
बाहरोक शब्द कें अकानब—आ
एगो प्रण ठानब
त कालि — आगामी कालि
हमरो एगो परिचय रहत
बिरदावनक हम
हमर बिरदावन ।

☆ *देसिल बयना : नवम्बर १९८१*

वसन्त गीतक मादे

एक गोट
स्पन्दनहीन-उदास
पतझड़ वन मे
भेल छल हमर जन्म
आ
छत्तीस बर्ख बितलाक बादो
स्थिति ओहिना छइ
ओना
सूनल त हमरो अइ जे
कहियो एहिठाम रहैत छल
बारहोमास छतीसो दिन
वसन्त बहार
आ ताही आशा मे हम
पटबैत आएल छी साध्यानुसार
एहि पतझड़ वन कें
वसन्ते सन पावस सेहो दन्तकथा बनि चुकल-ए
एहना स्थिति मे
हमरा सं वसन्तगीतक आशा
करबे होएत अनुचित
भाइ हे !

आउ ने
हमरा लोकनि संग मिलि पटाबी
गाछ सभ एखनो अइ प्राणवंत आ
हमरा विश्वास अइ
आइ ने कालि
एहि मे होएतैक नव पल्लव
रंग-बिरंगक फूल
जकर मादक गंध सं महमह करत परिवेश
पीबि मधु मातल मधुप गुंजन करत
तखन
हमहूं लिखब आ
निश्चिते लिखब
वसन्त-गीत जे
आकाशक नहि
परिवेशेक उपज थिक ।

✧ *देसिल बयना : अक्टूबर १९८१*

अपन समाचार

आफिस सं घुरती काल
भेटल छलाह एक परिचित साहित्यकार
हाथ जोड़ि कएलनि नमस्कार
आ विहंसैत पुछलनि समाचार
कहलियनि —
''समाचार त तत्काल एक्केटा
मैथिली कें लोक सेवा आयोगक परीक्षा सं
क देलकए बहार
लल्लू सरकार .....''
वेश सहजताक संग बजला ओं —
''हं, अखबार मे देखल-ए
आर अपन समाचार ?
केना अछि डांड़ ?''
सरिपहुं स्मरण शक्तिक बलिहारी
ओहिना लोक होइत अछि साहित्यकार
छओ मास बर्ख दिन पर होइत छथि भेंट
मुदा बिसरै नञि छथि ई बात
जे टूटल अछि हमर डांड़ / डांड़क हाड़
आ जुआनिए मे भ गेल छी बूढ़
मुदा अपना कहां रहैत अछि मोन
कहलियनि —

'वेश अछि
व्यथा वेदना रहित
सक्कत आ सोझ
एखनो उठा सकैत छी बोझ '
'आ धीया - पुता ?'
बीचहि मे पुछलनि फेर
कहलियनि —
'वर्तमान मे त माइक चिन्ता अछि
पश्चात् विशेष ....'।

⌖ *मिथिलायतन -५ : १९९३-९४*

हमरो एकटा गाम छल

हमरो एकटा गाम छल
देशक बहुतो गाम सन
एकटा शिव मन्दिर
एकटा डीहबारक थान
एकटा सहलेसक गहवर
एकटा मसजिद .....
कतेको टोल
कतेको जाति-धर्मक संयोग सँ बनल
हमर गाम
हमरा सभक गाम छल

हमरा गाममे
कोनो कीर दम्पतिक शास्त्रालाप नहि भेल छल
नहि भेल छलाह अवतरित
कोनो महापुरुष
आ जहाँ धरि प्रश्न अछि
कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक
गाम अपरिचित छल

पसर मे जाइत चरबाहक पराती
आ साँझ मे
दूर नदी कात सँ
बाध-बोन सँ भासल अबैत
बारहमासाक स्वर
आङन सँ

ढेकी जाँतक संगीतक संग
लगनीक स्वर
कहियो सोहर, कहियो समदाओन
कहियो तिरहुत, कहियो मलार
हमर गामक परिचिति छल

बरखा मे विलम्ब देखि
गमैया पूजाक सङोर
जट-जटिन खेलेबामे व्यस्त
महिला समाज
तजियाक संग
झरणी पर झुमैत किशोर / तरुण दल
फगुआक अबीर
आ जूड़शीतलक कादो-माटिक संग
हमर गाम जीबैत छल

कोजागरी पूर्णिमाक राति
नैसर्गिक सौन्दर्यक अवलोकन करैत
पान-मखान चिबबैत
कौड़ी भंजैत
आ जड़कालामे
घूरतर बैसल
तमाकू चुनबैत
महराइ सुनैत सगर राति
हमर गाम जगैत छल

जोतला खेत मे
सामा - चकेवाकेँ

भाव - विह्वल विदा करैत
पुनि अगिला साल अयबाक
आमंत्रण दैत
हमर गाम अगुआइत छल

राति-बिराति
कतौ कोनो आहट पाबि
लाठी-ठेंगा लए दौड़ब
कोम्हरो कने इजोत देखि
घैल-बाल्टी लऽ दौड़ब
ककरो अरथी मे कान्ह देबाक लेल
बाले-बच्चे ढङरि जायब
हमर गामक शक्ति छल

गामक नहि होइतहुँ
कोनो बहिरा देवानजी
वा मास्टर रामशरण महतो
अथवा
गुरे जरे खाइ जोग
नीमन दही बेचनिहार
सतहत्तरि बर्खक बूढ़
रामलाल गोआर के अपन बना लेनाइ
हमर गामक सौजन्य छल

हम ताकि रहल छी सएह गाम
अपन गाम ।

✻ *वैदेही : जनवरी १९९४*

एक फाँक अन्हार : एक फाँक इजोत

साँझ पड़िते
अन्हारक गर्तमे
हेरा जाइछ गाम
एकटा आशंका
एकटा आतंक
पसरि जाइछ
सभ ठाम
गाम
जतय भारतक आत्मा रहैछ :

साँझ पड़िते
शहर बनि जाइछ
तिलोत्तमा
नित नूतन आभूषण
नव-नव साज
रंग - बिरंगक आलोकक सम्भार
एकटा आकांक्षा
एकटा उन्माद
शहर
जतय
भारतक भाग्य विधाता रहैछ ।

✺ *वैदेही : अगस्त १९९५*

मैथिली-मन्दिर मे दीप लेसैत

मैथिली-मन्दिर मे लेसैत
दीप, फुलडाली मे सजबैत
फूल पूजाक मैथिली केर
प्रतीक्षा बालरविक विहुंसैत
बहाना मात्र सूर्यमुखि केर
बिसरि की सकत मैथिली पूत
रत्न मिथिलाक अनमोल अनूप
महाकवि आरसीक छवि, कृति
सौम्य सुन्दर आकर्षक रूप
करत सब बेर-बेर आवृत्ति
रहत जा धरा-धाम मिथिलाक
पानि गंगा - कोंशी - कमलाक
रहत ता नाम अमर कवि तोर
कृति चमकैत चान-पुनिमाक
मात्र आशीष तोर, प्रण मोर ।

★ *मैथिली : १९९६*

शब्द

हमरा लोकनिक पूर्वज
शब्द कें कहने छला ब्रह्म
ब्रह्म अर्थात स्रष्टा
ब्रह्म अर्थात आलोक
ब्रह्म अर्थात सेतु
जानि ने कतें तप–साधनाक पश्चात्
भेल होएत शब्दक निर्माण
केहन उदात्त हृदय-भाव
भरने होएत अर्थ-प्राण

हमरा लोकनि
अर्थात् बीसम शताब्दीक शेषक
सभ्य सुशिक्षित मनुक्ख
शब्द कें बना लेने छी अस्त्र
अस्त्र विभाजनक
अस्त्र शोषणक
अस्त्र संहारक
आइ शब्द स्नेह नहि
घृणाक करैत अछि सृष्टि-संचार

शब्द अइयो अछि
संसद-संविधान मे
वणिकक तिजोरी मे
स्तावक लोकनिक ठोर पर

कलमक नोक पर
शब्द आइयो अछि
मात्र बदलि गेल छैक ओकर अर्थ
ओ अनचिन्हार लगैछ
लगैछ भयावन
लोक, साधारण लोक
आइ शब्द सँ डेराइत अछि
शब्द-साधक लोकनि छथि
निस्पृह, निर्विकार

शब्द आइयो अछि
मुक्तिक हेतु कछमछाइत
आकुल-व्याकुल पेबाक लेल
अपन हेरायल अर्थ
तकैत अछि बाट
कोनो वाल्मीकि, विद्यापति, कृतिवासक
शब्द आइयो अछि
शब्द ब्रह्म थिक
सरिपहुं थिक ब्रह्म शब्द
शब्दे थिक ब्रह्म
शब्द
ब्रह्म ।।

★ *मैथिली : १९९६*

ओना सब किछु ठीके रहैक

ओना
सभ किछु ठीके रहैक
ट्राम - बसक भीड़
सांझक सुखद समीर
रासबिहारीक राधा-कृष्णक मंदिर
भक्तजन केर भीड़
भाव विह्वल अश्रुपूरित आंखि
बजबैत झालि आर मृदंग
गबइत गीत —
'धीर समीरे यमुना तीरे'
मुरलीधर बिहुंसैत
राधाक संग छलाह झुलैत झूला
वेश नाटकीय भंगिमा मे
रंग-बिरंगक बिजुरी-बत्ती छल जरैत
प्लास्टिक-निर्मित ओहि नन्दन कानन मे
आगा में राखल स्टीलक थारी
कैञ्चा सं भरल रहैक
आ
सामने फूटपाथ पर
अकाले कालक डाङे निहत
कोनो जाति गोत्र बिहीन
अनाम युवकक

कंकालवत् लहाश पड़ल रहैक
जाइत-अबैत बटोही
फेंकि दैत छल एतहु
पांच-दसटा पाइ
छाती-कपारक स्पर्शे
निवेदित करैत छल नमस्कार
ओना
सभ किछु ठीके रहैक
रस्ताक हलचल
शहरक कोलाहल
दोकानक भीड़
दोकानदारक चिकरब
सेल —सेल — सेल ।

✦ *देसिल बयना : सितम्बर - अक्टूबर १९८२*

हम श्रद्धाञ्जलि नहि द पाएब

आ
आइ फेर
सकाले सँ लागल अछि
लोकक करमान
अहांक पैंतालिसम बर्खीपर
नहि, सर्वसाधारण केओ नहि
सर्वसाधारणक प्रवेश छैक निषेध
अगबे बाबू बबुआन
हाकिम हुक्काम
विदेशी कर्जक पाइ सं कीनल
स्वदेशी गन्धहीन पुष्पक अम्बार
श्रद्धा नहि पुष्पे थिक सार
आ सर्वधर्म प्रार्थना सँ
सम्पूर्ण समाधिस्थल अछि गुंजायमान
अहांक प्रियगान
'अल्ला ईश्वर तेरो नाम'
सस्वर गाओल जा रहल
आ बढ़ले जा रहल दिनानुदीन
अल्ला - ईश्वरक बीच व्यवधान
नोआखली भनहि हो इतिहास
बम्बई अहमदाबाद थिक वर्तमान
हे राम !
अहिंसाक उपासक

हिंसाक बलिवेदी पर देल प्राण
सत्यमेव जयते !
के करत विश्वास
जखन कि सत्य स्वयं अछि संदिग्ध

हे महात्मा !
जानि ने
कोन क्षण मे धेने रही अहां लाठी
जे एहि देशक जनताक सम्बल बनिगेल
आ अहाँक उपवासक लौल
—— दिन चर्या
सरिपहुँ नियति बनि गेल
अहाँक अर्धनग्न रहबाक जिद
कोटि-कोटि जनताक लेल
हे विखंडित राष्ट्रक
विकलांग पिता
खंडित आस्थाक
झंझावात में फसल हम
अहाँ के श्रद्धांञ्जलि नहि द पाएब ।

♦ कर्णामृत : अक्टूबर - दिसम्बर १९९३

नेल्सन - मंडेला

कोनो
रक्तजीवी बाजक
चाहुर सं चोंचधरि किकिआइत
विगत छब्बिस बर्ख सं
मुक्तिक लेल छटपटाइत
एकटा श्वेत - कपोत
—— नेल्सन मंडेला

आ
हमरा लोकनि
बहार करैत छी शान्ति जुलूस
पारित करैत छी प्रस्ताव
सभा - समावेश मे ——

युद्ध नञि
शान्ति चाही
नेल्सन मंडेलाक
मुक्ति चाही ।

♦ कर्णामृत : *जुलाई - सितम्बर १९८८*

नीक नहि कएल अहां

भाइ !
बात त एहन नहि छल
कहने रही अहां –
जाएब
किन्तु एखने नहि जाएब
एकसरे नहि जाएब, असमय
किन्तु एकसरे चलि देल
असमय आ अकस्मात
दूर एहि महानगरक कोलाहल सं
किन्तु, लगहिं त छल सन्तान
केना लागल पार
मूनि लेल आंखि ?
नीक नहिं कैल अहां

भाइ !
महानगर मे रहितो अहांक
मोन दौड़ैत छल समुद्र दिस, जंगल पहाड़
दिस, समुद्रक ढेहु, वासन्ती वन बसात
विहग-गान लेल आकुल तन तृषित प्राण
केटी शा' आ गिन्सवर्गक संग
केओरातला महाश्मशान सं
शान्ति निकेतन धरि नहि पओलक
बान्हि अहां के बिसरिए

केना पाओत
केना पाओत बिसरि 'इनारक पार' सं
'जंगलक विषाद' धरि क इतिवृतान्त
हंग्री जेनरेशन सं एंग्री जेनरेशन धरिक 'शक्ति' केना
बिसरि पाओत
आङन मे प्रतीक्षा करैत अवनी
ओना, सन्देह त तखने छल भेल
जखन अपन समाधि लेखन अहां
लिखि राखि देल
किन्तु साठि सं साठिक कोन मेल ?
एना चलि देल
नीक नहि कएल अहां ।

कर्णामृत : अप्रिल - जून १९९५

जीवनानंददासक पश्चात् बंगलाक सर्वाधिक पठित आ चर्चित कवि *शक्ति चट्टोपाध्यायक स्मृति मे ।*

१५ अगस्त

१५ अगस्त आब
रोमांचित नहि करैछ
फहराओल जाएब तिरंगाक
शहीदक शोणित, ओकर
बलिदानक कथाक स्मरण नहि करबैछ
तिरंगाक केसरिया रंग
लालक बदला – एक पैघ
सुचिन्तित षडयंत्रक प्रतिफलन बुझि पड़ैछ
आ श्वेत खंडक बीचो बीच चक्र
एक पैघ कलंकक टीकाक प्रतीक
जाइ मे बोफर सं शेयर धरि
हवाला सं गवालाधरि कतेको
अपकर्म, कुकर्मक कथा गाथा
सत्तासीन भारत भाग्य विधाताक समाहित हो

रंग हरियरका
विशाल भारत भूमिक हरीतिमाक नहि
राजभवनक चहारदिबारीक भितरिया
वन्य परिवेशक
भयाओनताक कथा कहैत हो
जाइ मे एक सं एक अजोध
विषधर सह-सह करतै हो
से तिरंगा
भनहि कोनो विद्यालयक प्रांगण मे

फहराओल जाइत हो
आ लालकिलापर
अंतर त एतबे रहैछ जे
विद्यालय मे अस्त्र शस्त्रक
प्रदर्शन नहि होइछ
बाकी डपोरशंखी भाषण
जकरा आइधरि राशनक परीधि सं
राखल गेल अछि बाहर
कोनो पार्थक्य नहि

ओना लोक
एहि महान देशक नब्बेकोटि जनताक
कम सं कम नवम अंश लोक
सत्ता परिवर्तन आ स्वाधीनताक
मौलिक पार्थक्य पर विचारब
क देने अछि प्रारंभ
विदेश सं आयातित स्मृति नाशक औषधि
जे कीटनाशक नामे कैल जाइत रहल-ए प्रयोग
खेत खरिहान सं चूल्हि - चिनमार धरि
प्रभावहीन प्रमाणित भ रहल अछि
आ नेता लोकनिक माथ मे लीख
आ कुरसी मे उड़ीसक संख्याक
दिन प्रतिदिन बृद्धि भ रहल अछि
तत्काल
संतोषक बात इएहटा अछि ।

प्रकाशित : जुलाई - सितम्बर १९९८

एना नञि बुझाइए ?

आ
जखन पएर छोड़ि
पेटक बलेँ चल, लगैए
— मनुक्ख

त ओकरा सनाख केनाइ
मोश्किल भ जाइ छै
भाइ !
एना किए होइ छै
जे बेर-बेर जीतल युद्ध
हमरा लोकनि हारि जाइ छी
आ तकर कारण तकबाक बदला
अपनेमे कटाउझ कर' लागि जाइ छी
मिरजाफर आ जयचन्द त
सभ दिने होइत आयलए एहि देशमे
मुदा तकरा चिन्हबामे
आ चिन्हार करबामे
प्रत्येक बेर हुसि जाइ छी
सोचब आ योजना बनाएब
त नीक बात छै
मुदा हमरा लोकनि
सोचैत आ योजना बनबैत
एक युद्धसँ दोसर युद्धक तैयारीमे
तत्ते देरी लगा दैत छी जे
सेनासँ शस्त्रास्त्र धरि बिझा जाइए
की, अहाँकेँ एना नञि बुझाइए ?

देशराग

गाबै छथि देशराग
पंडित भीमसेन जोशी, बजाबै छथि
सितार पंडित रविशंकर,
पंडित हरि प्रसाद चौरसिया
बांसुरी, सरोद उस्ताद अमजद
अली खाँ, पंडित शिव कुमार शर्मा
संतूर, तबला उस्ताद
जाकीर हुसैन अल्लारखाक संग
नाचैत अछि लोक नृत्य
राजस्थानी नृत्यांगना
— बजे सरगम ....

आर मारते रास मेट्रोपोलिटन
धीया-पुता स्कूली युनिफार्म मे
देशक एकता
अखंडताक लेल
सेनाक जवान आइ
सरहद पर नहि, कश्मीर
पंजाब, आसामक फुलबारी मे
खेत - खरिहान चाह - बगान मे
लड़ैत अछि, आङन
घरमे हुलैत अछि ।

धरती प्रतिकार करैछ

धरती विशाल थिक
विशाल-हृदया थिक धरती
जंगल, पहाड़, मरुथल वा परती
धरतीक रूप थिक

धरती रत्नगर्भा थिक
जोगओने युग - युग सँ
अनमोल रत्नक असीम भंडार
अपन संतानक लेल

धरती रत्न प्रसवा थिक
सजओने नित नव - नव थार
रंग - विरंगक उपहार

धरती मा थिक
ममतामयी मा
ओ सभ किछु सहैछ
एक सीमाधरि
सीमाक अतिक्रमण ओ नहि करैछ बर्दास्त
ओ दीर्घ नि:श्वास छोड़ैछ
आ ज्वालामुखी भड़कैछ
अन्हर - बिहाड़ि उठैछ
ओ करोट फेरैछ

आ भूकम्प होइछ
राजमहल खंडहर बनि जाइछ
अतल समुद्र मे पहाड़
आ गगनचुम्बी पहाड़क स्थानपर
नदी बहैछ

धरती प्रतिकार करैछ
ओ एहिना प्रतिकार करैछ ।

❁ वैदेही : जून १९९३

एक गोट राष्ट्रद्रोहीक वक्तव्य

महामान्य अदालत !
हम जे कहब — सत्य कहब
सत्य छोड़ि किछु नञि कहब
जेना कि देखि रहल छी
हम एगो मनुक्ख छी
आ सरिपहुं हमर जन्म
ओहि गाम मे भेल छल
जकरा अणु अस्त्र निर्माण - कारखाना लेल
उजारि देल गेलए

किन्तु ,
महामान्य अदालत !
विश्वास कएल जाय
जं हमर जन्म आनो कोनो गाम में भेल रहैत
विरोध हम तैयो करितौं
एहि सं कनियों थोड़ नञि
आ जहांधरि एहि गामक छइ बात
से छेटगर होइतहि हम
एक मुट्ठी भात आ एक टूक वस्त्र लेल

एक गाम सँ दोसर गाम
दोसर सँ तेसर गाम ....
बौआइत रहल छी
बारहो मास तीसो दिन

तें, महामान्य अदालत !
प्रश्न कोनो एक गाम के उजाड़ि देबाक किंवा
किछु लोक के बाटपर उतारि देबाक नञि छइ
प्रश्न छइ —

जीवन आ मृत्युक
मनुक्खक अस्तित्वक

आ हमरा विश्वास अछि जे
अणु - अस्त्रक संहारकारी शक्तिक सम्बन्ध
फेर सं किछु कहबाक प्रयोजन नञि

महामान्य अदालत !
हमरा पर राष्ट्रद्रोहक आरोप लगाओल गेलए
स्वीकार करै मे आपत्ति नञि जे
हमर बुद्धिक आयाम अछि बड़ छोट

सरकारी शब्दावली
ओकर आरोपित अर्थ बुझबा सं

हम छी बिल्कुल असमर्थ
हम त आइधरि
सगरो पिरथी के मानैत आयल छी —

अपन गाम
अपन देश

आ तें
एहि विशाल सुन्नर पिरथी के
टुकड़ी - टुकड़ी मे बंटनिहार
हमरा लेल
ओहि नृशंस शिकारीक दल सं

कनियों कम नञि
जे निर्जन शान्त वन प्रान्तर मे
स्वच्छन्द विचरण करैत कोनो मृग-शावक कें
बध कए — हिस्सा - बखरा लेल कटाउझ करैछ

हे महामान्य अदालत !
जेना कि कहल गेलए
हम एगो कवि छी
सौंदर्यक उपासक
जीवनक कविता लिखैत छी हम
मृत्युक नञि
ओकर निर्ममता बीभत्सता आतंकित करैछ हमरा
तें हत्यारा के घृणा करैत छी
घृणित कर्म मानैत छी –
हत्या के
मानवताक विरूद्ध
एगो एहन अपराध
जकर क्षमा नञि
से हत्या —
भनहि विचारक नामपर हो
एनकाउन्टरक नाम पर वा
राष्ट्रक सुरक्षाक नाम पर .....

महामान्य अदालत !
कहबाक लेल त ओना बहुत किछु अछि हमरा लग
मानवताक आदि सं अद्यपर्यन्त किन्तु

'सीताराम कह ... आत्मा राम' .. रटाओल
पिजड़ा मे बन्द पाखीक
शक्ति आ सामर्थ्य सं
हम परिचित छी
नीक जकां परिचित छी
ते आर बेसी समय नञि ल
अपन वक्तव्य
एहीठाम शेष करैत छी

महामान्य अदालत !
अपने के धन्यवाद
जे हमरा किछु कहबाक समय देल गेल
आ हमर बात सूनल गेल
जय हो मनुक्खक
जिनगीक जय हो ।

कर्णामृत : शारदीय १९९०

ओइ दिन उगल नञि छल सूर्य

ओइ दिन
उगल नञि छल सूर्य
काबुलक क्षितिज पर
कारी सियाह राति
साम्राज्यवादी विस्तार - लिप्सा सन
अन्तहीन बूझि पड़ैत छल
आ तोप-बन्दूकक आवाज छीनि लेने छल
मात्र मनुक्खे टाक नञि
पशु-पाखी धरिक शान्ति
आतंकक कुसेहतर झांपल काबुल
एगो विशाल कबरगाह सन लगैत छल

ओइ दिन
उगल नञि छल सूर्य
तैयो उठल छल रहमत - रहमतुल्ला खान
पचहत्तरि बर्खक बूढ़
घड़ीक अलार्म सूनि
उठल छलै रजिया
ओकर साढ़े छओ बर्खक पोती
नित्यकर्म सँ निवृत भय
स्कूलक झोड़ा उठा
पोतीक हाथ पकड़ने बहरायल छल
राजपथ पर

आतंकक कुहेस, कबरगाहक चुप्पी कें चीड़ैत
अगुआइत रहल छल
भविष्यक हाथ धेने - अतीत

हठात् थकमका गेलै ओकर पैर
ओ देखलक
चौबटियाक बिजुलीक खम्हा सँ झूलैत
एगो लाश
क्षत - विक्षत, सोणिते-सोणितान
अपन पोती के कोरा में उठबैत
फिसफिसायल रहमत —
''नाजीब !
संयुक्त राष्ट्र संघक सुरक्षा मे तोहर ई परिणति !
मौलवाद, युद्धवाद तालीबान
जे गति हिनकर भेलनि
सैह गति तोरो लोकनिक हो
अल्लाक दोहाइ देनिहार शयतान .....''

ओइ दिन
उगल नञि छल सूर्य
सूनल नञि गेल छल अजान
मसजिदक छत-गुम्बज सं बान्हल
चोंगा सब गरजि उठल छल
दैत-दानो सन भयंकर शब्द
शयतानी फरमान —
''...महिला लोकनिक घर सँ बहराएब निषेध –

आफिस - कचहरी बन्न ..... स्कूल-कॉलेज बन्न
लड़की सबहक लेल ....''

''स्कूल बन्न ?''
व्यथित स्वरें पुछने छलै रजिया

''नञि कथमपि नञि
मरि गेलाह स्पार्टाकश
जीलै नञि क्रीतदास-प्रथा
विप्लव दीर्घजीवी हो''
वर्तमानक स्वर मे बाजि उठल अतीत

''विप्लव की होइ छइ, बाबा ?''

अबोधक जिज्ञासा सूनि बाजल छल रहमत
पोती के कोरा सँ कन्हापर लैत
बिहुँसैत —
''विप्लव थिक अम्मी आजादीक
आजादी —
घर सँ बाट पर बहरयबाक
अन्हार सँ इजोत दिस चलबाक
स्कूल मे पढ़बाक
तें ने कहैत छी – विप्लव ......''
''दीर्घजीवी हो''
अपन नन्हिटा हाथक मुट्ठी कसि
आकाश दिस उछालैत बाजल छल रजिया
अर्द्धप्रस्फुटित रक्त-कमल सन ओकर मुट्ठी

तानल रहलैक कइएक क्षण ......

ओइ दिन
उगल नञि छल सूर्य
काबुलक क्षितिज पर
धरतीक कोखि सं जनमल छल
एगो नक्षत्र
आकाश भेल छल रक्ताभ
चहचहायल छल चिड़ै - चुनमुन्नी
आ परातीक सुर अलापने छल
कोनो अनाम पाखी
सूनल गेल छल
आस्ते-आस्ते खुजैत
कतेको फट्टक - केबाड़क आवाज
घर सं बाट पर उतरैत
कइएकटा पदचाप .... ।

प्रवासी : मार्च १९९७

शहर शामियाना

ओना एहि शहर मे
प्राय: किछु ने किछु होइते रहैत छैक
आ तें बेसीकाल लोक
ध्यान नहिञेसन दैत छैक
परञ्ज परसू सांझ मे
एकटा एहन बात भेलैक
जे राताराती सगरो पसरि गेलैक
आ प्रात: संस्करण अखबार सभक
मुख पृष्टपर चतरि गेलैक
सभ अपना - अपना ढंग स
पिहानी गढ़लक
नामकरण कएलक
केओ एकरा अभूतपूर्व कहलक
त केओ ऐतिहासिक
ककरो पुनि बड़का साजिश बुझेलैक

विरोधी राजनैतिक दल सभमे
सेहो रहलैक मतपार्थक्य
केओ कहलक आतंकवादीक काज
त केओ देखलक मौलवादीक हाथ
ककरो विदेशी शक्तिपर छैक आरोप
त ककरो लगैत छैक दैवी प्रकोप
ओना एक बात पर सहमति छैक
जे घटनाक हेतु जिम्मेदार अछि सरकार

कारण घटना संसद भवनक सामने घटलैक
आ तखन जखन कि संसदक अधिवेशन चालू छलैक
आ तें केओ सरकारक इस्तिफाक माङ करैछ
त केओ न्यायिक जांचक
त केओ स्मारक निर्माणक
आ बात एते दूर बढ़ि गेलैक
जे कालि सांझखन संसद भवनक सामने
गोली धरि चलि गेलैक
सैकड़ो आहत आ दर्जनो मुइलैक
आ तैखन सं शहर में कर्फ्यू लागल छैक

ओना सरकार
उच्च न्यायालयक भावी
प्रधान न्यायाधीशक नाम
क चुकल अछि एलान
जांचक लेल तत्काल
शहर मे शान्ति छैक
कर्फ्यू उठलाक बाद की हैत
के जनैत छैक तखन
एतवाधरि सत्य जे
'मुइल सांढ़ द्वारा
जीबैत बच्चा प्रसब' वला बात
जे थिक बिल्कुल नव
से सभ मानैत छैक ।

● *कर्णामृत : अप्रिल - जून १९९६*

इतिहास मे नहि छइ

अपन निनानबे भाइक हत्याक पश्चात
मगधक सिंहासन पर बैसल छलाह चंडाल अशोक ।

राज्य – विस्तारक लिप्सा सँ
कएने छलाह आक्रमण कलिंग पर ।
इतिहास कहैत अछि —
कलिंग -- युद्ध में एक लाख लोक निहत
सवा लाख लोक आहत भेल छल
विजयी भेल छलाह सम्राट अशोक ।

शिलालेख सँ होइत अछि ज्ञात
अशोकक उपाधि —
देवानाम् प्रिय, प्रियदर्शी ।
प्रश्न उठैत अछि – के देने छल ई उपाधि ?
कलिंग -- युद्धक निहत लाखो योद्धाक
वृद्ध माए--बाप ? विधवा पत्नी ? अनाथ शिशु ?
वा आहत अपंग योद्धा ?
के देने छल ?

नहि, ई बात इतिहास मे नहि छइ
अपन मातृभूमिक रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग कएनिहार
ओहि लाखो योद्धाक नाम
नहि छइ इतिहास मे ।

देशज : २००१

सौन्दर्य बोध

ताजमहल हम नहि देखने छी
नहि देखने छी
अजन्ता एलोरा
खजुराहो वा कोणार्कक सूर्यमन्दिर
दिन आनू दिन खाउ बला
स्थितिए तेहने होइत छैक !
किन्तु भाइ,
सामर्थ्य
सौन्दर्य–बोधक पर्याय कहिया सँ भ गेल ?

ओना, हम देखने छी
साँझक मेघाच्छन्न आकाश
घर घुरल जाइत कोनो सारस-दम्पति
हम देखने छी ।

हम देखने छी
बैसाखक टहाटही दुपहरिया
आ गोठुल्ला मे गुटरु–गूँ करैत
कपोत–दम्पति हम देखने छी ।

हम देखने छी डबरी–चबच्चा मे
जलविहार करैत डुबैत–उगैत
हंस– दम्पति हम देखने छी ।

हम देखने छी
भादवक अन्हरिया राति
आ पछुआरक बँसबिट्टी
बारीक करजान मे चकमक करैत
अगणित भगजोगनी
हम देखने छी ।

आ बेर – बेर देखबा लेल ओ दृश्य
एखनो चकुआइए हमर आँखि
मन पड़ैए विद्यापतिक ओ पांति
जनम अवधि हम रूप निहारल .... ।

★ *देशज : २००१*

हम चाहै छी

कविता हमर
कोनो मंदिर मसजिद वा
कोठा सँ नहि, मजूरक झोपड़ी सँ
कारखानाक जरैत चिमनी सँ
खेत जोतैत हरक फार सँ
धीपल लोहा पर पड़ैत लोहारक हथौड़ा सँ
कुम्हारक चाक सँ
चमारक टाकु सँ जनमओ हम चाहै छी

हम चाहै छी हमर कविताक सौन्दर्य
कोनो देव प्रतिमाक साजश्रृंगार
कोनो वारबनिताक भाव–भंगिमा
लिपस्टिक रंगल अधरक मुस्कान नहि
एक हाथें चिल्हका सम्हारैत
चूल्हि पजारैत
घामे-पसेने तर-वतर भेल
कखनो बाट दिस, कखनो चूल्हि दिस निहारैत
कुलवधूक सहज सिनेह, गमलाक गुलाब नहि
सिहकैत मन्द बसात मे
लहलहाइत खेत हम चाहै छी

हम चाहै छी हमर कविताक अलंकार

मजूरक सक्कत हाड़ आ सोझ डांड़
मजगूत मांसल बाँहि आ कसल मुट्ठी तानल हम चाहै छी

हम चाहै छी हमर कविताक संगीत
छन्द-लय-ताल, कोठापर नचैत बाइजी
मंदिरक देवदासीक घुँघरूक आवाज
बजैत नाना साज नहि, ढेकी जांतक आवाज,
कनसारिनक लाड़नि
हट्ठा मे आ पौर पर चलैत बड़दक
गरदामीक बजैत घंटी–ध्वनि
लोहारक हथौड़ा आ मसीनक आवाज हम चाहै छी

हम चाहै छी हमर कविताक भाव
कोटि कोटि शोषित निपीड़ित मनुपुत्रक
परितोष नहि, आक्रोशक उपादान हो
मुक्ति संघर्षक प्रेरणा, शक्ति संरंजाम हो हम चाहै छी

हम चाहै छी हमर कविताक अर्थ
प्रजातंत्रक संसद संविधान मे
भाषाक अभिधान मे नहि ताकल जाय
पेटतंत्रक खेत खरिहान मे
कलकारखाना मे, गामक एकपेरिया आ
शहरक फुटपाथ पर, गामक बोनिहार आ
शहरक मजूरक अन्हार बस्ती मे हम चाहै छी

हम चाहै छी हमर कविता
महानगरक कोनो शीत–ताप–नियंत्रित
सभागार में भद्र सुसज्जित, सज्जन समुदाय मध्य नहि
पढ़ल जाय
कोनो कारखानाक गेट पर
मजूरक बीच, खेतक आरिपर
झहरैत मेघक बीच सारिबद्ध
धनरोपनी करैत श्रमिकक समक्ष हम चाहै छी
हम इएहटा चाहै छी
अपन कविताक लेल ।

♦ *मिथिला चेतना : काव्यांक*

भगवान तथागत

वन विहार लए
रथ सवार भए
बहरायल कपिलबस्तुक राजकुमार
सिद्धार्थक सोझा पड़ि गेल छल
कोनो एक वृद्ध बोनिहार
अभावे नहि !
वयभार सँ झुकल डांड़
ठीक धनुषाकार
लाठी पर टेकने देहक भार
ठुक – ठुक करैत चल जाइत ......
राजकुमार कें आश्चर्य लगलनि
लोक एना किएक झुकि जाइत अछि ?
मोन मे प्रश्न उठलनि
राजमहल सँ बाहरक जगत मे
ई हुनक प्रथम पदार्पण छलनि
आ फेर दोसर दिन
देखलनि ककरो अर्थी चल जाइत
फेर प्रश्न
लोक किएक मरैत अछि ?
प्रश्न आर प्रश्न
कोनो ने निदान
आकुल मन कोमल तन
राजकुमार गौतम एहने स्थिति मे

एक दिन
चुप्पे बहरा गेलाह
राज – पाट
मा – बाप
स्त्री – सुत त्यागि
सत्यक सन्धान मे,
जरा मृत्युक निदान मे
राजकुमार घुमला देश - विदेश
आ अन्त मे
कोनो गाछ तर
आँखि मूनि
ध्यानस्थ भऽ गेला
बिनु सत्यक सन्धान
भंग होयत नहि ध्यान
खूजत नहि आंखि
खएता नहि अन्न
पीता नहि पानि
एहने सन प्रण कऽ के
एहिना बीतल दिन कते
कत राति
अनाहार सं राजकुमारक
भेल कंठगत प्राण
केहन संयोग ! सुजाता
कोनो अन्धविश्वासक बस
भरि थार परसने खीर पहुँचलि

खेलनि गौतम पीलनि पानि
पलटलनि प्राण
भेटलनि ज्ञान
राजकुमार गौतम
आब भऽ गेलाह भगवान

भगवानक दर्शनार्थीक भीड़ जूमय लागल
शिष्यक संख्या बढ़य लागल
सारिपुत
मौदगलायन ......

कतेको राजा – महाराजा
सेठ – साहुकार भेल धन्य
पाबि अशीष
उल्लेखनीय छथि
मगधक राजा बिम्बिसार

भगवानक वाणी पसरय लागल
देश – देशान्तर
सुनने होएतीह गोपा
पिया विरह मे व्याकुल आकुल प्राण
आंखि सं बहइत अविरल नोर
'सखि हे, हमर दुखक नहि ओर'
सुनने होएत अबोध राहुल
पिताक कोरा – कन्हाक कल्पना तेजि
बाजल होएत —
बुद्धं शरणम् गच्छामि ....!
सुनने छली महारानी गौतमी

पुत्र वियोगें व्याकुल जिनिकर प्राण
हेरइत बाट आंखि पाथर – सन भेल
राज – पाट तजि
पदब्रजे जुमलीह संघाराम
(कोनो मोदिआइनक अर्थ सं
जकर भेल छल निर्माण)
संघारामक
नारी – प्रवेश निषेध नियम भेल भंग
संघारामक प्रथम बौद्ध भिक्षुणी बनलीह
गौतमक माता
महारानी गौतमी,

भगवान तथागतक
नाम यश पसरैत गेल
वयस ससरैत गेल
वृद्ध भेलाह
आ एक दिन मृत्यु कें प्राप्त भेलाह
ओना
भगवानक मृत्यु हो नहि
तें एकटा नव शब्द गढ़ल गेल
— निर्वाण
अवतारक श्रृंखला मे
एकटा नव कड़ी जोड़ल गेल
— तथागत भगवान ।

कर्णामृत : अक्टूबर - दिसम्बर १९९२

मनुक्ख आ ईश्वर

पिरथी पर
एहि विराट सुन्नर पिरथी पर
ईश्वर नञि छला
मनुक्ख स पहिने
छल जंगल पहाड़
झरना नदी
पशु पाखी ....
प्रयोजन नञि छलै
ओकरा सभ कें ईश्वरक
मनुक्ख के भेलै
आविर्भूत होमय लगला ईश्वर
एकक पश्चात् एक

राम
कृष्ण
ईशा
मुहम्मद
बुद्ध....

मनुक्खक कल्याण हेतु
ईश्वर अविनश्वर
आबय लगला
रहय लगला

आलोपित होइत चल गेल मनुक्ख
एकक पश्चात् एक
मनुक्ख नञि रहल
रहि गेल किछु

हिन्दू
मुसलमान
सिख
क्रिस्तान...

एहि पिरथी पर
एहि छोट–छीन पिरथी पर ।

संवाद : प्रवेशांक २००२

गाम – कोतवालक मादे

ओना
ग्राम–कोतबाल आइयो पहरा दैत छैक
अन्हरिया राति मे
लाठी लेने घुरैत छैक
आ लोकक नाम ल क
टाहि दैत छैक
मुदा लोक आब खखास नहि करैत अछि
गबदी मारि लैत अछि
कोतबालक उपस्थिति
आब ओकरा आश्वस्त नहि करैत छैक
आतंकित करैत छैक
लोक जनैत अछि जे
कोतबालक टाहि देब
चोरक उपस्थितिक पूर्वाभास थिक
आसन्न संकटक संकेत
आ जागल रहनाइ
विपत्ति कें नोतब थिक
तें लोक गबदी मारि लैत अछि

लोक गबदी मारि लैत अछि
कारण, ओ जनैत अछि जे आब चोर
इजोत देखने

किंवा आहट पओने
पड़ाइत नहि अछि
आर आक्रामक बनि जाइत अछि
आ कोतबाल
आब गामक नहि
चोरेक पहरा करैत अछि
लोक जनैत अछि

लोक जनैत अछि जे
टोल–पड़ोसक लोक
आब हल्ला सुनि
लाठी-सोंटा ल दौड़ैत नहि अछि
अपितु अपन–अपन घरक
फट्टक–केवाड़क
बिलैया–छिटकिन्नी
नीक जकां लगा लैत अछि
जागल होइतहुं
निन्न भेर होयबाक बहन्ना करैत अछि
फोंफ काटय लगैत अछि
तें लोक गबदी मारि लैत अछि

भाइ !
मोन पड़ैत अछि
नेना मे चोर-कोतबाल खेलाइत काल
कोतबाल बनैक लेल
कोना क लैत रही झगड़ा

कोतबाल आदर्श छल
गामक रक्षक
तें कोतबाल बनिते
मोन भ जाइत छल गद् – गद्
नीक जकां रेघा-रेघा क दी टाहि
गली-कुची मे चोर घुरै-ए
जगले रह...ब

सत्ते,
अबोध नेनाक आदर्श
आ वास्तव जगत मे
कतेक अंतर छैक !

ओना
ई भिन्न बात भेल
जे लोक आइयो कोतबाली दैत अछि
आ कोतबाले टा कें नहि
चोरो कें चीन्हैत अछि ।

★ *अन्तिका : अक्टूबर - दिसम्बर १९९९*

एहि महाश्मशान मे

एहि महाश्मशान मे
सभ किछु छैक, मुदा
शांति नहि

जीबाक लालसा मे
पल–पल मरैत
पल–घड़ी–दिन गनैत
अपन नम्बरक प्रतीक्षा करैत
पंक्तिबद्ध लाश, लाशे लाश
गोर कारी
छोट–पैघ
मोट–पातर लाश
एहि महाश्मशान मे
पुरोहित, डोमक कृपा पयबाक लेल
आकुल अछि, व्याकुल अछि
व्यस्त अछि बनिया बेकाल
बेचै मे काठ–कुश–वस्त्र
श्मशानक ठुट्ठा गाछक डारि–डारि
बैसल अछि ध्यान लगौने
गिद्ध सभ
छोट–पैघ
बूढ़ नव जुआन

ई गिद्ध सभ नहि खाइछ मांस
पीबैत अछि शोणित अगबे
मांसक टूक ल उड़ि जाइछ
दूर देश
बिना कोनो रोक–टोक निर्यात
उदारीकरण —
देशक लेल
सूर्य दिस बढ़बाक लेल आर किछु डेग
नितांत प्रयोजनीय अछि
विदेशी मुद्रा

एहि महाश्मशान मे
सभ किछु छैक
उत्सव – आनन्द
हलचल कोलाहल
हंसी आर अश्रुजल, मुदा
आलोक नहि

एहि महाश्मशान मे
सभ किछु छैक, मुदा
शांति नहि ।

✶ अन्तिका : अक्टूबर - दिसम्बर १९९९

अहां आ हम

रचना
जे कोनो किएक ने हो
इतिहासहंता, गीता वा गीतांजलि
निरुद्देश्य नहिं होइछ
नहि होइछ निरपेक्ष रचनाकार
फर्क एतबेक
जे हम मानैत छी
अहां नहि

सोद्देश्य मिथ्या सम्भाषण करैछ
युधिष्ठिर
गुरु सं छलना करैछ
अहूं जनैत छी
मुदा मानैत नहि छी
धर्मराज कहैत छी ओकरा
हम नहि ।

✶ *अन्तिका : अक्टूबर - दिसम्बर १९९९*

दिनचर्या

राति
आइ–कालि नमहर बुझाइछ
निन्नक अभाव
डाँड़क दर्द
पैरक टटैनी बढ़ले जाइछ
उठि बैसी
बत्ती जरा ली
बहार करी कोनो पोथी
होइछ मन
मुदा पाँजर मे सूतल
फोंफ कटैत पत्नी पर जाइछ नजरि
भरि दिनुका खटनी
थाकल ठेहिआएल ....
मन नहि मानैछ
मन त मने थिक
आइ–कालि इहो कहाँ गुदानैछ

पड़ल रहैत छी
बाम–दहिन करैत
मुनने आँखि
स्मृतिपटल पर भासल अबैछ
सागरमुखी उजरा मेघ सन कते रास बात.....
गरमीक समय
भोरक स्कूल

कोस दू–एक पएरे एनाइ–गेनाइ
भरि–भरि दिन रेकैत रहनाइ
एइ गाछी सँ ओइ गाछी
चिक्का–कबडी खेलेनाइ
मंडैया पोखरि मे चुभकनाइ
आ राति आङन मे अखरे सेज पर सूति रहनाइ
कहियो अन्हर कहियो बिहाड़ि
कहियो ताइ संग बरखा
चिचिआइत चिचिआइत
अकच्छ भ छोड़ि दैत छल मा
निन्न टुटैत
जखन सौंसे आङ–ओछैन भीजि जाइत
सरिपहुँ केहन छल ओ निन्न
कत गेल ओ निन्न

डाकडर कहै छथि
चिन्ता जुनि करी
चिन्ता सँ घटैत अछि शरीर
बढ़ैत अछि रोग
बन्धु बान्धव कहैत छथि
चिन्ता जुनि करी
बड़ बेसी चिन्ता करैत छी अहाँ

जेठ बालक चारि मास सँ
भरती छथि टी॰ बी॰ असपताल मे
चिन्ता जुनि करी

माझिल पुतोहु मास दिन सँ छथि मरणासन्न
डाकडरक निरसल बैद्यक शरणापन्न
चिन्ता जुनि – करी

कन्यादान कपार पर
चिन्ता जुनि करी

छोट नेना पढ़नाइ–लिखनाइ छोड़ि
टंडैली करैत फिरैत छथि
चिन्ता जुनि करी

पत्नी बढ़ा लिलनिहें रक्तचाप
चिन्ता जुनि करी

एमहर अपना प्रोस्टेट ग्लैंडक नव उत्पात
ताइ पर निम्न रक्तचाप
चिन्ता जुनि करी

मन पड़ैत अछि सोना
थाकल ठेहिआएल घुरैत छलौं घर
केबाड़ खुजिते गछारि लैत छल गर
बाबा फू ...... बाबा फू
कोन जादू छलै बालबोधक ओड़ आखर मे
जकरा सुनबा लेल आकुल अछि कान
व्याकुल अछि प्राण
जानि ने कोना हैत गामपर
मरणासन्न माइक सन्तान
चिन्ता जुनि करी

कुलाभाइ के चाहियनि
हुनक पोथीक मादे मन्तव्य
वियोगी के कविता सवक्तव्य
''सम्पर्क'' मे पढ़बाक लेल कविता कोनो नव
चिन्ता जुनि करी

आफिस मे झुलि रहल
तीस प्रतिशत कर्मचारी कमेबाक फरमान
चिन्ता जुनि करी

बेकार देश मे आर
थोड़ेक बढ़त बेकार
की करओ बेचारी सरकार
मंत्रिमंडलक विस्तार
देशक उन्नति लेल आवश्यक थिक
चिन्ता जुनि करी

क्रोनिएक घूस खा मैच हारब
बनल अछि शताब्दी–समाचार
परंच किएक
किएक कोनो देशक आदर्श
विश्वासक प्रतीक
थोड़े पाइ पर बिका जाइछ
से नहि होइछ समाचार
चिन्ता जुनि करी

वैश्वीकरणक नाम पर
वैश्याकरण
गणतंत्रक नाम पर
गणिकातंत्रक षडयंत्र मे
पमरियाक तेसर सन
हाँजी–हाँजी करैत रही
चिन्ता जुनि करी

आँखि मूनि सुतबाक प्रयास करी
कालि फेर आफिस
निन्न–नहि भेने निन्नक गोटी खाइ
चिन्ता जुनि करी

एखनो बहुत बाँकी अछि
राति ।

✱ आरम्भ : सितम्बर २००१

संवाद

प्रिय भाइ !
बर्खोक अनावृष्टिक पश्चात्
बरखाक पहिल बुन्न सन
अहाँक पत्र
सूचना संवाद

संवाद चलबाक चाही
चलैत रहबाक चाही संवाद
संवाद आवश्यक थिक
धरती आकाशक बीच
नदी आ पहाड़क बीच
वृक्ष आ बसातक बीच
मजूर आ मशीनक बीच
किसान आ जमीनक बीच..
सृष्टिक निरंतरताक लेल
संवाद आवश्यक थिक

संवाद चलबाक चाही
चलैत रहबाक चाही संवाद
संवाद आवश्यक थिक

जीवाक लेल
संवाद थिक प्राणवायु
जगबा जगेबाक लेल
संवाद थिक सूर्यक पहिल किरण
व्यष्टि सँ समष्टि-दिस अगुएबाक लेल
मास्को सँ मुसाहारी
श्रीकाकुलम सँ सान्तियागो, सान्ताक्लारा
बेजिंग सँ वियतनाम, नक्सलवाड़ी कैं
जोड़बाक लेल
संवाद थिक सेतु

संवाद चलबाक चाही
चलैत रहबाक चाही संवाद
संवाद आवश्यक थिक
श्मशानी शांति आ
गणपतिक दुग्धपानक भ्रम तोड़बाक लेल
बजारीकरण आ
लाशक राजनीतिक विरूद्ध
बसातक रुखि मोड़बाक लेल
संवाद आवश्यक थिक

संवाद चलबाक चाही
चलैत रहबाक चाही संवाद
संवाद आवश्यक थिक

संवाद थिक परिचिति हमर
संवाद थिक लक्षण जीवंतताक
संवादहीनता थिक मृत्युक पर्याय
विस्मृतिक विषम व्याधि सँ बचबाक लेल
संवाद आवश्यक थिक
'शिखा'क आलोक मे
मीताक नाम
सहस्त्रबाहुक अभियानक शंखनाद थिक संवाद
भाइ !
सरिपहुँ आवश्यक थिक संवाद ।

अन्तिका : अप्रिल - जून २००१

बसात

बसात बहैत अछि
बहैत अछि तैं थिक ओ बसात

बसात बहैत अछि
बहनाइ थिक ओकर परिचिति
ओकर अस्तित्व

बसातक नहि होइछ
कोनो निश्चित रूप
निर्देशित दिशा-बाट
मात्र निश्चित लक्ष्य

बसात बहैत अछि
बहनाइ थिक ओकर लक्ष्य
सृष्टिक निरंतरताक लेल
आवश्यक थिक बसातक बहनाइ

बसात बहैत अछि
ओ अपनहि निश्चित करैछ
अपन दिशा अपन बाट
ओ नहि मानैछ कोनो अवरोध प्रतिरोध
अवरोध पाबि बसात बनि जाइछ बिरड़ो–बिहाड़ि
बिरड़ो–बिहाड़ि आवश्यक होइछ
गतिरोध–अवरोध तोड़बाक लेल

बसात बहैत अछि
बहैत अछि तैं थिक ओ बसात ।

☆ *अन्तिका : अप्रिल - जून २००१*

कौआ

खोंता मे नहि रहैछ
कौआ, ओ जनैत अछि
जिनगी नहि थिक स्लीपवेलक गद्दा
संघर्षक नाम थिक जिनगी
जिनगी जीवाक लेल आवश्यक होइछ
अंगेजि लेब थोड़ेक रौद–बसात
थोड़ेक बरखाक बुन्न

गाछक डारि पर रहैछ
कौआ, बैसाखक दुपहरियाक टहाटही रौद
जेठक अन्हर-बिहाड़ि किंवा
माघक हाड़ कँपबैत जाड़
गाछक आश्रय बुझैछ ओ पर्याप्त

ओना खोंता बनाबए जनैत अछि
कौआ, बनाबितो अछि
नवागत शिशुक लेल
बड़ यत्न सँ जमा करैछ
काठी–कुठी दुनू बेगती मिलि –
तूरक फाहा वा नरम दूभि नहि

खोंता मे रहैत अछि

कौआ, जखन पाड़ैत अछि अंडा
दिन–राति सेबने रहैछ
अन्न–पानि तेजि —
अंडा सं बच्चा होइछ
कौआ जोगबैछ ओकर आहार
आ फेर बच्चा उड़ाँत होइछ
माइक पछोड़ ध' उड़ि जाइछ एक दिन

घूरि क फेर खोंता मे नहि जाइछ
कौआ, फेर उएह गाछ
उएह गाछक डारि

खोंता मे नहि रहैछ कौआ ।

अन्तिका : अप्रिल - जून २००१

मैना

सिजरियनक कोनो व्यवस्था नहि
प्रसव पीड़ा सँ छटपटाइत
भारी आकाश
घामे पसेने तर–बतर भेल
एहि माघक जड़काला मे
चतुर्दिक अन्हार
राति आ दिन मे क' पायब पार्थक्य
असंभव, युक्त - फ्रंटक शासन सन
प्रकृति-पीड़ाक सहि रहल संताप
सभ चुपचाप

मनुक्खे नहि, चिड़ै चुनमुनिओ चाहैछ
आलोक, उत्ताप
प्रात: दसक धक लागल हेतैक
अपन अपन खोंता मे दबकल रहत
के कत्ते काल/हाड़ कँपबैत जाड़

घुराड़ीक प्रचलन नहि
महानगरक सभ्य समाज मे
अंतत: देखल जाइछ सूर्य
'स्टिल बार्न बेबी' सन
प्राणहीन निस्तेज
तैयो बहराइत अछि लोक
खोंता सँ चिड़ै चुनमुनी
सामनेक परती पर उतरैत अछि

दू जोड़ा मैना
बैसैत अछि मुँहा–मुँही
घेंट नमरा नमरा
माथ हिला हिला बतिआइछ
जेना क रहल हो कोनो गंभीर मंत्रणा

धरती आकाश/नवजात शिशुक भविष्य
कुहेसक सत्ता आ उदारीकरणक खत्ता
देश काल परिवेश
काल्हि थिक मकर संक्रान्ति
गंगा सागरक मेला
कुंभक पहिल स्नान / भेड़िया धसान
निर्वाचन आसन्न
पेट संगहि / पेटक लेल परिश्रम
परिश्रम लेल बाँहि मे चाही थोड़े शक्ति
थोड़े गर्मी

पसारैत अछि पाँखि
फरफरबैत अछि
कूद–फान करैत अछि
मैना, श्रमजीवी मैना
संचयक प्रवृत्ति सँ सर्वथा अपरिचित
परतीक विभिन्न भाग मे
छिड़िया जाइत अछि / आहारक खोज मे
समाज सचेतन / स्वावलंबी मैना ।

अन्तिका : अप्रिल - जून २००१

टीड़ी

आइ काल्हि नहि अबैत अछि
पहिने अबैत छल – टीड़ी
करैत आसमर्द
केने अन्हार
बाधक बाध भ' जाइत छल सुड्डाह

आइ कालि अबैत अछि चुनाव
पाँच बर्ख पर
पहिनहुँ कहियोकाल
गामक गाम भ' जाइत अछि घबाह

टीड़ी चाटि जाइत छल लोकक जजात
चुनाव–चाटि जाइत अछि लोकक माथ

आइ कालि टीड़ी नहि अबैत अछि
किएक नहि अबैत अछि !

अन्तिका : अप्रिल - जून २००१

नव रचनाक मादे

भाइ,
सरिपहुं एमहर कहां किछु लिखि पाओलए नव
अथवा एना कही
जे लिखबा जोग नव
किछु अहिए नञि हमरा लग तत्काल
त अनुचित नञि होएत

भाइ
ओना लिखबाक लेल त
किछुओ लिखल जा सकैए
जेना —
हरिक हजार नाम
लाख नाम कृष्ण के
केशव के कोटि नाम
पद्म नाम विष्णु के
आ पन्नाक पन्ना भरल जा सकैए
परंच से त अहांक अभिप्राय नहि
आने हमरे अभिप्रेत

भाइ
थोड़ त नञि लिखलनि

बालचन्द विज्जावइ भाषाक
घोषणा कएनिहार
देवक स्थान पर लोकक प्रतिष्ठाता
कविपति विद्यापति
जनिक कोमल कान्त पदावलीक सदानीरा
आइयो कल-कल छल-छल करैत
भ रहलए प्रवाहित
मिथिला सं बंगालधरि
उत्कल सं आसाम धरि
किन्तु हमर प्रबुद्ध मैथिल समुदाय
ओइ में आइयो तकैत छथि —
परकीया प्रेम
रूप माधुर्य
श्रृंगार रस-रंग
''एकटा लोटा छनि
बेटा छनि तीन
पानी पीबैत काल
होइ छनि छीना छीन''
मे भोगल यथार्थक अवलोकन
कहां क पबैत छथि केओ
मैथिल ललनाक कंठ सं प्रवाहित होइत
''सखि हे हमर दुखक नहि ओर''
सुनिओ क
आंखि सं झहरैत अविरल नोर

देखियो कऽ
अनुभवक प्रामाणिकता
कहां अभरैत छनि किनको

भाइ,
ककरो दंडित करबाक लेल
आरोपित कएनाइ
अपन दोष झंपबाक लेल
दोसरापर दोष मढ़नाइ
सदा स रहलैए
सामर्थ्यवानक चरित्र
से कहबाक प्रयोजन कहां रहि जाइछ
जखन कि हम
पहिनहि कहि आयल छी जे
सीता बनवासक कारण छलाह
स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम
अयोध्यापति राम

तें भाइ
एहनो त भ सकैछ
जे कतौ कोनो फांक रहि गेल हो
किएक ने पल – घड़ी बिलमि
एहू मादे विचारि लेल जाय
सिंहावलोकन
पश्चादपद होएबाक संकेत नञि

आ ने शवासनक मुद्रा
मृत्युक पूर्वाभ्यास निक
आ, ओनहुना
हम मानैत छी जे
लेखनक अतिरिक्तो छैक
बहुत रास काज
जकरा अनठाओल नञि जा सकैछ
लेखनक सार्थकताक लेल सेहो
आकि नञि ?

☆ *कर्णामृत : अक्टूबर - दिसम्बर २०००*

सोना आब नमहर भ गेलए

सोना आब नमहर भ गेलए
दू बर्ख नओ मासक सोना
नहि जनैछ मास बर्खक हिसाब
मुदा ओ जनैत अछि
कुर्सी पर चढ़ि भ जायब ठाढ़
आ बजैत अछि –
बाबा देख, बौआ एतेकटा ।

ओ जनैत अछि
एड़ी अलगा – अलगा
अलना पर सँ कपड़ा खीचब
आ भरिघर छिड़िआयब
आ बजैत अछि –
बाबा देख, खेला देख ।

सोना आब नमहर भ गेलए
दू बर्ख नओ मासक सोना
नहि जनैछ नमहर हेबाक अर्थ
मुदा ओ जनैत अछि
'सु–सु' करबाक जगह होइत छैक फराक
आ 'नाना' नहि होइछ सबहक देखबाक, छुबाक वस्तु
झट द बाजि उठैछ
गलती बात ।

सोना आब नमहर भ गेलए

ओ बिसरि गेलए बहुतो पहिलुक अभ्यास बात
पहिने माँ सँ सुनैत छल गीत
सीखने छल —
मकुनी हाथी चल बलियाती
कत्ते दूल मधेपुल .... ।
पंचमीक अवसर पर माँ संग जाइत छल
पुरय लेल हकार
सीखने छल —
दल लगैए हे भियाओन लगैए
गौला हम नहि जेबै तोला अङना
दल लगैए हे......
आब ओ सीख लेलक चलायब टी॰ भी॰
भरि – भरि दिन देखैत रहैछ
आ राति मे तकर नकल हमरो देखबैछ
डिसूम डिसूम ....
ऋत्विक रोशन आ गोविन्दाक गीत नाच
परसू गबैत छल —
तुम दिल की धलकन मे
लहते हो लहते हो ....
कालि घर घुरिते हाथ पकड़ि बाजल –
बाबा, कहो न प्याल है ....
सोना आब नमहर भ गेलए
हमर चिन्ता आब नमहर भ गेलए ।

कर्णामृत : अक्टूबर - दिसम्बर २००१

दिन एखनो बहुत बांकी छइ

आ
हठात् अन्हार देखि
रातिक कल्पना मे मातल
बादुर मुदुस्साक दल
अपन - अपन सोन्हि सँ बहरा गेल अछि
बैसि गेल अछि
आसन जमा
नाम - जप निमित्त
सनातनी धर्मक पंडा लोकनि
सूरूज भगवान कें
करबाक हेतु राहुमुक्त
आ गहन दानक आशा मे
ओरिया रहल-ए बरतन बासन
डोम सभ

ओना हमरा लोकनि जनैत छी
जे ग्रहण थिक
ग्रहगतिक स्वाभाविक परिणति
स्थायी नहि थिक अन्हार
इजोते थिक स्थायी
कारण - इजोतक उत्स थिक मनुक्ख

मनुक्ख
जे अपन जन्म लग्नहिं सं
रहलए संघर्षरत
अन्हारक विरुद्ध

तें हे हमर समान धर्मा
थकमकाइ जुनि
विरामक ई समय नहि
पैर झारू
दिन एखनो बहुत बांकी छइ ।

❁ ६ नवम्बर, १९९३

उनटा बसात

हमर एगो बन्धु छथि
कवि छथि, अप्सरा छवि छथि
हुनका सगरो देखाइत छनि हरियर
धरती हो वा आकाश
तीसो दिन बारहो मास
अरुणोदयक संग आकाशक रक्ताभ रंग
देखल नहि छनि हुनका
भोरका नित्र छनि बड़ अंतरंग
मास बैसाख हो वा अखाढ़
हुनका लेल सदा सर्वदाए बहैछ वासन्ती बसात
दादुर धुनित्रे नहि
कार कौआक कर्कश शब्दहुं मे
होइत छनि कोइली कुहुकबाक आभास
से बरू अनायास हो वा सायास

तैयो हमर बन्धु नहि छथि प्रसन्न
उपरे उपर प्रसन्न होएबाक भान करितो
भीतरे - भीतर छथि वेश अवसन्न
जे लोक किए ने दैत छनि संग
गएबा मे सांझ - पराती भोर विहाग
किए ने बुझैत छनि हुनक भाव
दुखी छथि हमर बन्धु

हमर बन्धु सरिपहुं दुखी छथि देखि

अदौ सं पसारैत आयलए जे हाथ
आइ सहजहि केना उसाहि दैछ
माथ झुका सहैत आएलए जे
गारि - मारि पुस्त - दर - पुस्त
आइ कनिञो अनट विनट देखि
ठांहि पठांहि बाजि दैछ

बन्धु दुखी छथि
पूज्य पितृदेव पढ़ओने छलथिन बबुआनीक पाठ
परंच आइ त उनटे बहैछ बसात ।

☆ *मिथिला सुरभि - २*

दादा नाम केवलम्

माघक ई अकाल वृष्टि
संसदीय चुनाव सन
तोड़ैछ सर्वसाधारणक हाड़
ताहिपर ई उदंड बसात
राजनैतिक मदति पुष्ट मस्तान सन
क रहल आतंकक सृष्टि
कइएक दिन सं लेने छथि पतनुकान
दिनकर दिनानाथ
नेताक नीतिबोध सन
बंगालक खाड़ी मे सृष्टि भेल अछि निम्नचाप
प्रसार भारतीक समाचार
पिजा रहल अछि मोछ अपन
बनिया बेकाल कालाबाजारी
सजा रहल बाजार
भारतीय मुद्राक अवमूल्यन
एक अमरिकी डालर
भारतीय चालिस रुपैया पचीस पाइ
पचीसं रुपैए किलो पियाजु
आलू जरि धेने अछि दम
इएह कि कम
दोहाइ हे उधारी करज नीति
दोहाइ जनता सरकार
दोहाइ डंकल अंकल
भतीजा चिदाम्बरम्
बाबा नाम केवलम्
दादा नाम केवलम् ।

❋ २३ जनवरी १९९८

हमरा गाम कहां बिसरल जाइछ

''गाम - देहात बहुत अंश मे
रहबाक योग्य नहि अछि ।
लिखबाक मोन करब
से उत्साह घटैत अछि ।''
लिखैत छथि अग्रज कवि जीवकान्त

ओ गाम मे रहैत छथि
पहिनहुं रहैत छलाह
खजौली हो वा डेओढ़
गामे त थिक
आब नहि लगैत छनि नीक

गाम में ओना एखनो रहैत अछि लोक
बड़ बेसी नहि
तैयो थोड़ - बहुत लोक
शहर मे लोक नहि रहैछ
अगबे मशीन

गामक चारूकात एखनो देखल पाओल जाइछ
धरतीक विस्तार
ओकर समैया श्रृंगार
कल कल छलछल करैत
बहैत नदी धार

चिड़ै - चुनमुनीक कलरव
कोइलीक कुहुकव
खंजनिक फुदकव
दिनक नील निरभ्र
आ सांझुक सिनुरिया आकाश
गाम मे एखनो देखल पाओल जाइछ

शहर मे पाथरक अम्बार
घरक स्थान पर गगनचुम्बी मकान
तर मे पिचाइत किकिआइत धरती म्रियमान
चौंदिस मशीनक कोलाहल

धुआं मे हेराएल नुकाएल
अलसाएल अस्वस्थ आकाश
वैश्वीकरणक विहाड़ि मे
मानव जातिक भविष्य सन

शहर हमरा लगैछ
परीकथाक ओइ राक्षसी सन
जे अपन क्षेत्र में अएनिहार
प्रत्येक सुन्नर जुआन के
मोहि लैत छल अपन माया रूप सं
राति भरि करैत छल कालि ओकरा संग
आ होइते भोर सुग्गा बना
क लैत छल बन्न पिजड़ा मे..

हम शहर मे रहैत छी
संएतीस बर्ख सं रहैत आयल छी एहि शहर मे
तैयो ई लगैछ अनचिन्हार - अनभोआर
हमर रोम - रोम मे व्याप्त अछि शहर
मोन में गाम
अप्पन गाम
अप्पन आङन
अप्पन दलान
अप्पन खेत
अप्पन खरिहान
सलहेसक गहवर
बरहम स्थान

हमरा गाम कहां बिसरल जाइछ ।

✪ ११ अप्रील, २०००

तिस्ता

अवरोधक विरूद्ध
विद्रोहक प्रतीक थिक तिस्ता
जाइपर निरमाओल त जा सकैछ पूल
किन्तु बान्हल नहि जा सकैछ बान्ह
तिस्ते त देल
परी – लोक केर सन्धान ।

सिक्किम

धानक देश हो
वा सुखक घर
थिक धरि मनुक्खक लेल
प्रकृतिक वर ।

गान्तोक

(१)

पहाड़ काटि निरमाओल
अपरूप रूप
कल्पित स्वर्गक
वास्तव स्वरूप ।

(२)

प्रकृतिक कोर मे बसल
गान्तोक, सूनल छल
देखल विपरीत
गान्तोक कोरा मे खेलाइत प्रकृति
कौखन कोरा, कौखन कान्ह
कौखन घुघुआमना झुलैत
खिल–खिल हँसैत गान्तोक
वात्सल्यक प्रतीक ।

(३)

कतौ धरती उपर आकाश
कतौ आकशहि पर धरती
धानक खेत, जंगल, पहाड़ आ परती
चिर नूतन अम्लान स्वच्छ
हरियर कंचन ई देश
नहि थकान आलस्य
हरैत'छि निमिषहिं सकल कलेश
सरिपहुँ अद्‌भुत देश ।

आरम्भ : सितम्बर २००१

ओ सभ कि सरिपहुं देखने अछि
परंच हमर प्रश्नक जबाब मे ओहो सभ
खाली हंसनहिटा छल, भ भा – भ भा क'
अन्ततः एक दिन
हम रामलाल के घेरल
ओ हमर गाम मे सभ सं बूढ़ छल, पुछलिऐक —
'अए हओ बुढ़बा तों आजादी देखने छहक ?
सत्त – सत्त कहिह'
ओ बकर – बकर ताकय लागल हमर मुंह
'आजादी हओ, आजादी — देखने छहक ?'
हम ओकरा बुझबैत बाजल रही
आ एगो दीर्घ निसास छोड़ैत बाजल छल रामलाल —
'बौआ, एहि अस्सी बर्खक वयस मे
हम त खाली बेरबादीए देखैत आयल छी
कहियो रौदी, कहियो दाही
कहियो हैजा, कहियो मैया पपियाही
कहियो जमिंदारक जुलूम आ
आब त ओकर संग पुरैत छइ थानाक सिपाही
तें त कहै छियनि उगलाहा कें
आर की देखेबह, बड देखली
आब हमरो अरूदा ल क अहीं सभ जीबू
भ सकए जे देखि ली
किदन त नाम भने कहने छली
हं, राम सत्त,
मन पड़ल
— अजादी ।

✧ *माटि पानि : अक्टूबर १९८३*

क्षणिका

(हाइकू)

(१)

एक हवाला
अनेक रूप – रंग
गणतंत्रक

(२)

म सँ मंडल
मुसलिम वा मार्क्स
दिल्ली पहिने

(३)

लाहौर बस
कारगिल मे ध'स
बिजेपी बस

(४)

वंशी टेरथि
कंसीराम, नाचथि
माया ता–ता थै

(५)

अहाँ नीक छी
माझेठाम ठीक छी
अहाँ बूड़ि छी ।

❁ आरम्भ : सितम्बर २००१

(१) सूर्योदय

माइक आंचरतर सं
बहार क मुंह अपन
बिहुंसि देलक
शिशु अबोध ।

(२) राति

दुरगमनियाँ कनियां बनि
बन्न सांझ महफा मे
बेटी प्रत्येक दिन
चलि जाइछ
देने बिछोह व्यथा
पसारि मन पिरथी पर
कारी घन अन्धकार ।

(३) चन्द्रमा

परदेशी पाहुन केर
जोहैत होथि बाट जेना
खिड़की लग ठाढ़ि
कुनू राधिका ।

(४) बर्खान्त

इहो बर्ख
ओहिना बीति गेल
बूढ़ अथबल सूर्य
बस गैरेजक
पछुआर मे डूबि गेल ।

❀ देसिलबयना : जनवरी १९८२

गुटर गूं करैत कपोत, डबरी चभच्चा मे जल विहार करैत हंस, भादोक अन्हरिया राति मे चकमक करैत अगणित भगजोगनी कैं सौन्दर्य बोधक प्रतीक मानैत छथि ।
श्मशानक ठुट्ठा डारि डारि पर ध्यान लगौने बैसल छोट - पैघ गिद्ध सभ कैं स्वीकार नहि करैत छथि । संचयक प्रवृत्ति सँ सर्वथा अपरिचित श्रमजीवी - स्वावलंबी मैना कैं स्वीकार करैत छथि ।
शिव मन्दिर, डिहबारक थान, सलहेसक गहवर आ मसजिद बला अपन गाम वा कोनो गाम तकैत छथि । चरवाहाक पराती, बरहमासा लगनी, सोहर, समदाओन, तिरहुत मलारक स्वर अकानैत छथि । नहि अभरैत छनि । तैओ राम लोचन ठाकुर कैं विश्वास छनि जे गाम मे भारतक आत्मा रहैछ । आकांक्षा - उन्माद मे डूबल शहर सँ ओ आशंकित छथि । कारण, शहर मे भारतक भाग्य विधाता रहैछ ।
प्रायः दू दशक में विभिन्न पत्रिका सभ मे छिड़िआएल कविता सभक ई संग्रह ''लाख प्रश्न अनुत्तरित'' हमरा लोकनि पढ़ब आ —

''चिन्हब अपन शक्ति आ
बाहरोक शब्द कैं अकानब – आ
एगो प्रण ठानब
त कालि – आगामी कालि
हमरो एगो परिचय रहत
बिरदावनक हम
हमर बिरदावन ....

— नवीन चौधरी